रिकॉर्ड :– दर पे आए हैं कसम ले..... ॐ पिताश्री 29/6/64

ओम् शान्ति। मीठे–2, सिकीलधे बच्चे अभी अच्छी रीत से जान गए हैं कि बेहद के बाप से बच्चों को प्यार मिलता है ज़रूर। जैसे हद के लौकिक बाप अपने रचे हुए बच्चों को प्यार करते हैं, अच्छी तरह से संभालते हैं, उनकी सेवा करते हैं कि हमारा कुल वृद्धि को पावे। भक्तिमार्ग में भी बेहद के बाप को सभी याद करते हैं ज़रूर– कब बाप से मिलन होता है। यहाँ यह बाप तो कहते हैं, मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, शिक्षा देने वाला अर्थात ड्रामा के आदि–मध्य–अन्त का नॉलेज देने वाला भी हूँ। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। बाकी वो शास्त्र आदि में तो सब है भक्तिमार्ग का ज्ञान। उससे कोई को मुक्ति–जीवनमुक्ति नहीं मिल सकती। सबका मुक्ति और जीवनमुक्ति दाता बाप कहते हैं, मैं ही हूँ। मुक्ति–जीवनमुक्ति देने लिए मुझे आना पड़ता है। जब भारत में अति दुख होता है तो कल्प–2 कल्प के संगम पर मुझे ही आना पड़ता है। ड्रामा अनुसार माया 5 विकार तुमको दुखी बना देते हैं। तुम जानते हो, अभी दुख के पहाड़ गिरने हैं, विनाश होना है। उसी समय खूनी नाहक का खेल चलता है। कितनी खून की नदियाँ बहेंगी! फिर सतयुग में घी की नदियाँ बहेंगी। खून की नदियाँ बहती हैं फिर उसी समय हाहाकार हो जाता है, बहुत दुखी होंगे। अब बच्चों को बाप की सर्विस भी बढ़ानी है अच्छी तरह। तुम मददगारों से ही भारत स्वर्ग बनता है। तुम जानते हो, हम ही सिकीलधे बच्चे, ब्राह्मण कुल भूषण भारत को फिर से दैवी स्वराज्य बनाते हैं, बाप से दैवी स्वराज्य का वर्सा लेते हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, सर्विस की युक्तियाँ निकालते रहो। बाबा का भी खयालात चलता है ना। अभी बाबा गोला 6×4 का बनवा रहे हैं। इसको ही स्वदर्शनचक्र कहा जाता है। यह बहुत अच्छी चीज़ है। इस पर तुम सर्विस बहुत अच्छी रीत कर सकते हो। यह राजधानी स्थापन करने अथवा भारत को रावण राज्य से बदल रामराज्य स्थापन करने में कोई खर्चा नहीं है। तुम हो ही नॉन वायोलेंस, अहिंसक। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमो दैवी धर्म वाले तुम बनते हो। जानते हो, हमको बाबा का मददगार बनकर भारत को हीरे जैसा बनाना है। कल्प–2 हम यह सर्विस करते रहे हैं। अभी हम हैं गॉड फादरली सर्विस पर। गॉड फादरली स्टूडेन्ट्स भी हैं, गॉड फादरली चिल्ड्रेंस भी हैं। बच्चे जो बनते हैं उनपर रिस्पॉन्सिबुलिटी रहती है। बाप कहते हैं खबरदार रहना, कोई भूल–चूक न करना। बाबा किस्म–2 की सर्विस बतलाते हैं– किस प्रकार भारतवासियों को रास्ता बतलावें बेहद के बाप से वर्सा लेने का। समझाया जाता है, यह तो 21 जन्म सतयुग का जन्म सिद्ध अधिकार है। सतयुगी डीटी वर्ल्ड सॉवरंटी इज़ यूअर गॉड फादरली बर्थ राइट। बाप है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। सबको स्वर्ग की बादशाही मिल(नी) है। पुरुषार्थ यहाँ करना है। ऐसे नहीं, सतयुग में लेनी है। बाप को समझाना पड़ता है तो सभी बच्चे सुनें। यह गोला, स्वदर्शनचक्र बड़ा 6×4 आइरन शीट पर होना चाहिए। ऐसे बड़े बनवाए फिर बड़े–2 मुख्य स्थानों पर रखो। नीचे सब कुछ लिखा हुआ भी है। जो देखेंगे, समझेंगे, यह तो राइट बात है। समय नजदीक होता जावेगा। मनुष्यों को बरोबर यह डर अंदर आवेगा, अब समय नज़दीक है। समय प्रति समय सर्विस अर्थ बच्चों को राय देते रहते हैं– ऐसे–2 करो तो सर्विस बढ़ेगी। हर एक अपने घर में भी यह बोर्ड लगाओ। शिवबाबा का चित्र भी हो। यह है गीता का भगवान। फिर लिखा हो– डीटी वर्ल्ड सॉवरंटी आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। हर एक अपने घर में बोर्ड लगा दे। घर–2 में तुम ज्ञान गंगाएँ हो ना। बोर्ड देख बहुत आवेंगे। उनको समझाना है, तुम आत्माओं का बेहद का बाप वह निराकार है। तुम भाई–2 हो। हम उस बाप से वर्सा ले रहे हैं। आगे चलकर बहुत धूमधाम होगी कि वह भगवान आए पधारे हैं। नाम तो है ब्रह्माकुमारियाँ। शिवबाबा का भी नाम है। आगे चलकर मनुष्य समझेंगे। राजधानी तो ज़रूर स्थापन होगी। यज्ञ में विघ्न भी पड़ते रहते हैं; क्योंकि राजा–रानी कोई है नहीं, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। कोई को समझाओ और वह बी.के. की तरफ लेवे तो भी हंगामा कर देंगे। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी...। समझते हैं सब

धर्म मिल एक हो जाएँ। अब धर्म तो भिन्न–2 हैं, तो सब एक कैसे होंगे? खुद कहते हैं, हम कोई धर्म को नहीं मानते। गवर्मेन्ट को अपने धर्म को भूलना, यह ड्रामा में है। और धर्म स्थापन होते हैं तो यह देवी–देवता धर्म प्रायःलोप होना चाहिए। इसलिए सब अपने को हिन्दू कहते हैं। देवता धर्म लोप है तब बाबा कहते हैं, फिर से हम देवी–देवता धर्म की स्थापना करने आए हैं। अनेक धर्मों का विनाश भी सामने खड़ा है। बाकी कितना समय ठहरेंगे! ब्रह्मा की आयु भी 100 वर्ष राइट देखने में आती है। यह बाबा का शरीर कितना समय होगा। इनसे पहले आफतें भी आनी हैं। मनुष्य तो कहते, सतयुग आने में लाखों वर्ष हैं। तुम जानते हो, आज नर्क में हैं, कल स्वर्ग में होंगे। हम आत्माएँ दौड़ रही हैं। अभी 84 जन्म पूरे हुए। दुख का पार्ट पूरा हुआ। बस, बाबा अभी हम आए कि आए। यह अंतिम है। बाबा साजन आया है, कहते हैं– बच्चे, पवित्र, लायक बनो तो साथ ले जाऊँगा। योग से लायक न बनेंगे तो सज़ा खावेंगे, फिर पद भी कम हो जावेगा। बात तो बहुत सहज है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। इसलिए बेहद के बाप को और बेहद सुख के वर्से को याद करना है। 8 घण्टा है मैक्सीमम, फिर जितना चाहिए याद करो। जितना याद करेंगे, ऐसा पद मिलेगा। 8 घण्टा तो ज़रूर याद रखना चाहिए। पुरुषार्थ करना है। यह भी जानते हैं कल्प पहले मुआफिक ही बच्चे पुरुषार्थ करते हैं। इसको साक्षी हो देखा जाता है, कौन कितना पुरुषार्थ करते हैं मोस्ट बिलवेड बाप से वर्सा लेने। कल्प–कल्पांतर वो ही लेने लिए अधिकारी बनेंगे। तो बाप समझाते हैं, यह ल०ना० का चित्र भी बहुत अच्छा है। सबको देना है। बाबा ने राजयोग सिखाया ही है स्वर्ग के लिए। लौकिक बाप भी बच्चों की कितनी सम्भाल करते हैं। बेहद के बाप को भी कितनी सम्भाल करनी पड़ती है। माया बड़ा हैरान, बीमार कर देती है, फिर बाप आकर दवाई करते हैं। यह है संजीवनी बूटी। बाकी कोई पहाड़ की बूटी हनुमान नहीं ले आया। सिर्फ बाप और वर्सा को याद करना है। बाप को याद करने बिगर वर्से को याद कर नहीं सकेंगे। अब भक्तिमार्ग अर्थात ब्रह्मा की रात पूरी होती है, फिर बाबा आकर दिन स्थापन करते हैं। आधा कल्प है ब्रह्मा का दिन, आधा कल्प है ब्रह्मा की रात। घोर अंधियारा है ना। घड़ी में काँटा खड़ा है। पुरानी दुनिया बदल अब नई दुनिया आनी है। कितना सहज है! छोटी–2 बच्चियाँ बैठ समझावें तो लौकिक–पारलौकिक मात–पिता का अच्छा शो करेंगे। बाप रचता का काम है स्त्री, बच्चों आदि रचना को भी अपना साथी बनावें। अपनी रचना को भी रास्ता बताना है। कामचिक्षा का सौदा बदल ज्ञानचिक्षा पर बिठाना है। यह बोर्ड बहुत अच्छे बन सकते हैं। 30×40 के चित्र भी बहुत पड़े हैं, सब यहाँ भेज दिए हैं। बच्चे न सम्भाल सके तो बाबा ने कहा– अच्छा, बाबा सम्भालेंगे, यहाँ से सबको भेज देंगे। बाप को तो सब कुछ सिर पर उठाना पड़ता है। बाप निराकार, निरहंकार है। कैसे बैठ बच्चों की पालना करते हैं। कहते हैं, मेरे कारण इन(ब्रह्मा) को भी गाली खानी पड़ती है, नहीं तो यह कलकत्ते का जैसा नवाब था। कहते हैं ना, वाट वेदे ब्राह्मण फँसा। बाबा को थोड़े ही पता था, ऐसे प्रवेश करेंगे, मैं ब्रह्मा बन फिर श्री नारायण बनूँगा। कितनी गाली खाई है। बाबा कहते हैं, तुम्हारे से भी मेरी ग्लानि जास्ती करते हैं। तुमको तो करके गाली देते हैं, मुझे तो पत्थर–2, ठिक्कर, टट्टी आदि में भी ठोक दिया है। मेरी कितनी निंदा की है। तुम तो सिर्फ गाली खाते हो। राजभाग मिलता है, इसके लिए गाली खाई तो क्या बड़ी बात है! मुझे तो आधा कल्प से गाली देते रहते। कहते हैं, कुत्ते–बिल्ली, पत्थर–ठिक्कर सबमें परमात्मा है। कोई कहते, सर्वव्यापी है या तो फिर कहते, परमात्मा की और उनकी रचना बेअन्त हैं। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। ईश्वर रचता है, इनको नॉलेज तो होनी चाहिए ना सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त (का)। बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, मैं इसमें आया हुआ हूँ, इनकी दाढ़ी का ख्याल रखो। इनकी दाढ़ी सो उनकी। अब उनको कलंक न लगाना। विकारों को योगबल से भगाते रहो। कल्प–2 तुम माया पर जीत पाए जगतजीत बनते आए हो। स्वर्ग की मालिक तो प्रजा भी बनती है; परन्तु पुरुषार्थ कर मात–पिता के तख्त पर जीत पहनो। यह है ही राजयोग। बाप जानते हैं यह मम्मा–बाबा पहले नम्बर में जाते हैं। मम्मा कुमारी कन्या, यह अधरकुमार है। घर में बच्चे ऐसा कुछ काम

करते हैं तो बाप कहते हैं, हमारी दाढ़ी की पत रखना। नाम बदनाम न करो। बेहद का बाप भी कहते हैं– बच्चे, नाम बदनाम (न) करना। अच्छी रीत घर–2 में बोर्ड लगा हुआ हो– आकर बेहद के बाप से वर्सा लो। पिछाड़ी में तुमको शेरों का शिकार करना है। राजाओं को, सन्यासियों को पिछाड़ी में जागना है। दिन–प्रतिदिन तुम भी तीखे होते जावेंगे। शक्ति मिलती जाती है। समझाना है, देखते हो सामने विनाश खड़ा है। लड़ाइयाँ लग रही हैं और यह है रुद्रज्ञान यज्ञ। हम ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण सो फिर देवता बनेंगे। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। दिन–प्रतिदिन बहुत सहज होता जाता है। बाप का रूप भी ले समझाया है कि वह स्टार है; परन्तु नयों को पहले ही यह नहीं समझाना है। जब अच्छी रीत समझें, पूछें कि इतना बड़ा रूप है! तब समझाना है कि यह साक्षात्कार तो बहुतों को होता है। राम–कृष्ण का भी लिखा हुआ है, बोला– हमने देखा ज्योति मेरे में समाई; परन्तु मतलब कुछ भी समझते नहीं। जैसे आत्मा चमकता हुआ स्टार है वैसे ही बाप है। उनको भी प०पि०प० कहा जाता है। (वो) ही ..... परमात्मा। वे इनमें आते हैं, आकर बाजू में बैठ जाते होंगे। गुरू के बाजू में शिष्य बैठ जाते हैं ना! वो सिखलाते हैं तुम बच्चों को। यह भी बाजू में सीखते रहते हैं। बापदादा कम्बाइन्ड हैं। यह बड़ा गुह्य राज़ है। जब कोई पूछे तब समझाना है, नहीं तो बाबा–2 कहते रहो। बाबा स्वर्ग के लिए राजयोग सिखलाते हैं। वे तो बच्चे जानते हैं इस समय तक जो पास्ट हुआ सो ड्रामा। विघ्न तो पड़ते रहेंगे। बच्चों को भी माया ज़ोर से तूफान में लावेगी; परन्तु हाथ न छोड़ना है। माया अजगर अच्छे–2 लालों को खा गई। कल्प पहले भी हुआ था। जो तीखे, विशाल बुद्धि बच्चे हैं वे हर बात को समझ सकते हैं। विचार–सागर–मंथन करेंगे– हम ऐसे–2 किसको समझावें, दान करें। बाबा रूप–बसंत है, तुम भी रूप–बसंत हो। बाबा कहते हैं, मैं स्टार हूँ, मेरे में भी पार्ट है। हर एक आत्मा में पार्ट भरा हुआ है। यह बातें साइन्स घमण्डी भी समझ न सकते। वो रिकॉर्ड घिस जाए, टूट–फूट जाए, यह आत्मा स्टार इमॉरटल है, इनमें इमॉरटल पार्ट भरा हुआ है। इनकी कब एण्ड नहीं होगी। एण्ड नहीं तो आदि भी नहीं, चलता आता है। इस ड्रामा के राज़ को भी तुम समझते जाते हो। तुम हो नैनहीन, अन्धों की लाठी। उन्हों को रास्ता बताना है। सबकी अब वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे जाना है। बाप कहते हैं, मैं सबको ले जाऊँगा; इसलिए जितना हो सके बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसको रूहानी यात्रा कहा जाता है। बाप कहते हैं– हे राही बच्चे, थक मत जाना। बाप और रचना को याद करना है। रचना का मालिक बनना है। यह तो अति सहज है। सदैव शिवबाबा को याद करते रहो। मोटर चलाते भी बुद्धि का योग वहाँ रहना चाहिए। बाबा ने ब(ताया) है, भक्तिमार्ग में भी पूजा करते बुद्धि और तरफ भाग जाती है। बाबा अपना मिसाल बताते हैं, हम नारायण की पूजा करने बैठता था, बुद्धि और तरफ भागती थी, फिर अपन को चमाट मारता था। अभी भी बुद्धि दौड़ती है। पुरुषार्थ करते–2 उनकी याद में शरीर छोड़ना है। मनुष्य भक्ति करते हैं कि कृष्ण की याद में शरीर छोड़ें तो कृष्णपुरी में पहुँच जावें; परन्तु याद ठहरती नहीं है। कृष्ण तो सबका बाप नहीं है, सबका सद्गति दाता राम। शास्त्र (आदि) पढ़ते–2 तमोप्रधान ज़रूर बनना है। बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। मुक्ति तो सबको मिल जाती है, फिर जो भी आते हैं, पहले उनको सुख ज़रूर देखना है। नई आत्मा ऊपर से आती है इसलिए इनका मान होता है। भल किसमें प्रवेश करते हैं तो उनका नाम बाला हो जाता है। अरविंद घोष क्या था, अब क्या हो गया है! कितने बड़े–2 आश्रम हैं! कहेंगे, कल्प पहले भी ऐसे हुआ था, फिर होगा। हम सो देवी–देवता बन रहे हैं। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही संगमयुग पर हो, बाकी सब हैं कलियुग में। यहाँ आने वाले जानते जावेंगे, बरोबर अब कलियुग का अंत है। दुनिया बदल रही है। माताओं को लिफ्ट देने बाप आते हैं; क्योंकि माताओं पर अत्याचार बहुत हैं। स्त्री का पति मर जाता तो बच्चे, माता को दरबदर कर देते, धुँधकारी बन पड़ते हैं। दशाएँ बदलती रहती हैं। कोई पर राहू की दशा बैठती है, फिर भी आ जाते हैं। बाबा कहेंगे, फिर से पुरुषार्थ करो। यह कमाई है। बाप को याद करेंगे तो वर्सा ज़रूर याद आवेगा। टेव पड़ जानी चाहिए। जितना जो चाहे कमाई कर सकते हैं। अच्छा, आज हीरालाल बाबू जी जा रहे हैं। गुडमॉर्निंग। ॐ